राजस्थान का इतिहास - एक परिचय

PDF Part - 2

☛ महाराणा प्रताप की मृत्यु के पश्चात मेवाड़ का शासक कौन बना?

(1) कर्णसिंह (2) जगत सिंह
(3) अमर सिंह (4) राजसिंह (3)

व्याख्या–अमरसिंह 1597 ई. में मेवाड़ का शासक बना। शासक बनने के उपरांत उसे मुगल आक्रमणों का सामना करना पड़ा। 1613 ई. में जहांगीर स्वयं अजमेर पहुंचा और शाहजादा खुर्रम (शाहजहां) को मेवाड़ अभियान का नेतृत्व सौंपा।

- महाराणा अमरसिंह व जहांगीर के मध्य 5 फरवरी 1615 ई. में मुगल मेवाड़ संधि हुई। इस संधि की शर्तें निम्न थी–
  1. मेवाड़ का महाराणा कभी भी मुगल दरबार में उपस्थित नहीं होगा बल्कि युवराज को मुगल दरबार में भेजेगा।
  2. चितौड़ दुर्ग पुन: मेवाड़ को लौटा दिया गया, मगर उसकी मरम्मत नहीं की जा सकती।

☛ मेवाड़ के महराणा राजसिंह के द्वारा किस राजकुमारी के साथ विवाह करने के कारण औरंगजेब उनसे नाराज था?

(1) रूपमती (2) चारूमती
(3) मानूमती (4) गुणवती (2)

व्याख्या–किशनगढ़ की राजकुमारी चारुमती जिसका विवाह औरंगजेब से होना था लेकिन राजसिंह ने 1660 ई. में चारूमती रहे विवाह कर लिया जिसके कारण औरंगजेब अप्रसन्न हो गया।

- 1679 ई. मे औरंगजेब द्वारा जजिया कर लगाने का राजसिंह ने विरोध किया।
- मुगल-मारवाड़ संघर्ष छिड़ने पर महाराणा राजसिंह ने राठौड़ों का साथ दिया।
- 1680 ई. में राजसिंह की मृत्यु हो गई।

☛ महाराजा राजसिंह का शासन काल था–

(1) 1597–1620 (2) 1628–1652
(3) 1652–1680 (4) 1632–1670 (3)

व्याख्या–महाराजा राजसिंह 1652 ई. में मेवाड़ का शासक बना। राजसिंह ने 'विजय कटकातु' की उपाधि धारण की।

- औरंगजेब ने राजसिंह को 6000 जात व सवार का मनसब प्रदान किया।
- राजसिंह ने 1664 ई. में उदयपुर में अम्बा माता मंदिर का निर्माण करवाया।
- औरंगजेब के डर से श्रीनाथ जी की मूर्तियों को लेकर भागे गोसाई दामोदर व गोपीनाथ को राजसिंह ने शरण देकर सिहांड़ (नाथद्वारा) में श्रीनाथ जी की मूर्ति व कांकरोली (राजसमंद) में द्वारिकाधीश की मूर्ति स्थापित की।

☛ 1456 ई. में मालवा के मोहम्मद खिलजी प्रथम व गुजरात के कुतुबुद्दीन के बीच कौनसी संधि हुई?

(1) चम्पानेर की संधि (2) आवल बावल की संधि
(3) 1 व 2 दोनों (4) इनमें से कोई नहीं (1)

व्याख्या–1456 ई. में मालवा के महमूद खिलजी प्रथम व गुजरात के कुतुबुद्दीन के बीच चम्पानेर की संधि हुई। इस संधि में यह तय किया गया कि दोनों शासक मिलकर कुम्भा पर आक्रमण करके उसे हराकर उसके राज्य को बांट लेंगें।

☛ सुमेलित नहीं है–

शासक	सेनापति
(1) मालदेव	जैता-कूँपा
(2) उदय सिंह	जयमल-फत्ता
(3) हम्मीर चौहान	रणमल-रतिपाल
(4) महाराणा प्रताप	आल्हा-ऊदल (4)

व्याख्या–राजस्थान इतिहारा के जुड़वां सेनानायक–

1.	जैता-कूँपा	–	मालदेव
2.	गोरा-बादल	–	रतनसिंह
3.	जयमल-फत्ता	–	उदयसिंह
4.	आल्हा-उदल	–	परमर्दिदेव
5.	बालक-मदन	–	जैत्र सिंह
6.	रणमल-रतिपाल	–	हम्मीर देव
7.	धन्ना-भीमा	–	मानसिंह (मारवाड़)
8.	नुसरत खां-उलूग खां	–	अलाउद्दीन खिलजी

☛ कर्नल जेम्स टॉड ने मारवाड़ के राठौड़ों की वंशावली के आधार पर राठौड़ों को माना है?

(1) चन्द्रवंशी (2) सूर्यवंशी
(3) ब्राह्मल की संतान (4) कन्नौज शाखा का (2)

व्याख्या–कर्नल जेम्स टॉड ने मारवाड के राठौड़ों की वंशावली के आधार पर इन्हें सूर्यवंशी माना है।

- मुहणौत नैणसी ने मारवाड़ के राठौड़ों को कनौज से आने वाली शाखा बताया।
- जोधपुर राज्य की ख्यात में इन्हें राजा विश्युतमान के पुत्र राजा वृहद बल से पैदा होना बताया है।
- दयालदास ने इन्हें सूर्यवंशी माना है और इन्हें ब्राह्मण भल्लराव की संतान बताया है।

☛ मारवाड़ का आदिपुरुष किसे माना जाता है?

(1) राव जोधा (2) राव सीहा
(3) राव मालदेव (4) राव उम्मेदसिंह (2)

व्याख्या–राव सीहा को कन्नौज के जयचंद गहड़वाल का वंशज माना जाता है। सीहा केवल मारवाड़ के एक छोटे से भाग पाली के उत्तर-पश्चिम में अपना राज्य स्थापित कर पाया था।

☛ राव चूण्डा ने मारवाड़ की राजधानी किसे बनाया?

(1) पाली (2) मण्डोर
(3) सोजत (4) सिवाना (2)

व्याख्या–राव चूण्डा का शासनकाल 1394-1423 ई. तक था। राव चूण्डा ने मण्डोर को राठौड़ों की राजधानी बनाया। मण्डोर पर अधिकार कर लेने के बाद इसने आस-पास के क्षेत्रों खाटू, डीडवाना, सांभर, अजमेर, नाडोल आदि पर अधिकार कर लिया।

- चूण्डा की पत्नी चांद कंवर ने 'जोधपुर में चांद बावड़ी' का निर्माण करवाया था।
- पूंगल के भाटियों द्वारा वह धोखे से 1423 ई. में मारा गया।

☛ राव जोधा ने जोधपुर शहर कब बसाया?

(1) 1359 ई. (2) 1459 ई.
(3) 1559 ई. (4) 1659 ई. (2)

व्याख्या–राव जोधा (1438-1489 ई.) मारवाड़ के राव रणमल का पुत्र था। राव जोधा ने 1459 ई. में जोधपुर शहर बसाया व इन्हें अपनी राजधानी बनाया।

- राव जोधा ने चिडियांडक पहाड़ी पर मेहरानगढ़ दुर्ग का निर्माण करवाया था।
- राव जोधा ने दिल्ली के बहलोल लोदी की सेना को परास्त कर अपनी प्रतिष्ठा प्राप्त की।
- डॉ. गौरीशंकर हीराचंद ओझा राव जोधा को जोधपुर का प्रथम प्रतापी शासक मानते है।

☛ खानवा के युद्ध में राणा सांगा की सहायतार्थ मारवाड़ की विशाल सेना का नेतृत्व किसने किया?

(1) राव गांगा (2) राव मालदेव
(3) राव चूण्डा (4) राव जोधा (2)

व्याख्या–राव माल देव ने खानवा के युद्ध में राणा के सांगा की ओर से भाग लिया। खानवा युद्ध समय मारवाड़ का शासक राव मालदेव के पिता राव गांगा थे।

- राव मालदेव ने 1532 ई. में बहादूर शाह के मेवाड़ पर आक्रमण के दौरान राणा विक्रमादित्य की सहायता की।

☛ जसवंत सिंह के जोधपुर पहुँचने पर किले के द्वार खोलने से इनकार करते हुए कहलवा भेजा कि "राजपूत या तो युद्ध से विजय होकर लौटते हैं या वहाँ मर मिटते हैं महाराजा पराजय के बाद नहीं लौट सकते हैं।" यह किस रानी ने कहा था?

(1) रानी जसवंतदे (2) सलह कंवर
(3) चारूमती (4) रूठी रानी (1)

व्याख्या– जसवंत सिंह–1657-58 में हुए उत्तराधिकार युद्ध में जसवंत सिंह ने औरंगजेब के उत्तर विरुद्ध धरमत के युद्ध में दारा का साथ दिया, लेकिन कासिम खां के विश्वासघात के कारण दारा की पराजय हुई और जसवंत सिंह को जोधपुर लौटना पड़ा। जसवंत सिंह के जोधपुर पहुंचने पर उसकी 'उदयपुरी रानी' ने किले के द्वार खोलने से इंकार कर दिया। जसवंत सिंह द्वारा पराजय का बदला लेने का वचन देने पर दुर्ग के द्वार खोले गए।

☛ मुगल अधीनता स्वीकार करने वाला पहला राठौड़ शासक कौन था?

(1) राव बीका (2) राव लूणकरण
(3) राव कल्याणमल (4) राव राय सिंह (4)

व्याख्या–मुंशी देवीप्रसाद ने राजसिंह को 'राजपूताने का कर्ण' कहा।

- जूनागढ़ दुर्ग में जयमल फत्ता की पाषाण मूर्तियाँ भी लगवाई।
- मुगल अधीनता स्वीकार करने वाला पहला राठौड़ शासक राव कल्याण मल था इन्होंने 1570 ई. के अकबर के नागौर दरबार में मुगल उपस्थित होकर मुगल अधीनता स्वीकार की।
- कल्याणमल ने खानवा के युद्ध (1527 ई.) में राणा सांगा की ओर से भाग लिया था।

☛ जयानक भट्ट ने किसे 'कवि बांधव' की उपाधि प्रदान की?

(1) अणोराज (2) अजयराज
(3) विग्रहराज चतुर्थ (4) पृथ्वीराज तृतीय (3)

व्याख्या–

- अजमेर में संस्कृत पाठशाला बनवाई।
- बिसलपुर बसाकर बिसलपुर झील बनवाई।
- किलहोर्न ने इसे 'कालीदास और भूवभूति' के बराबर बताया।
- जयानक भट्ट ने विग्रहराज चतुर्थ की 'कवि बान्धव' की उपाधि दी।
- विग्रहराज चतुर्थ दिल्ली पर अधिकार करने वाला पहला शासक था जिन्होंने तोमरों को पराजित कर दिल्ली पर अधिकार किया था।
- विग्रंहराज ने गजनी के खुशनशाह को परास्त किया था।
- विग्रहराज चतुर्थ ने अजमेर में एक संस्कृत पाठशाला बनवाकर उस पर हरिकेली नाटक की पंक्तियां खुदवाई। कुतुबुद्दीन ऐबक ने इसे लुड़वाकर वहाँ 'ढ़ाई दिन का झोंपड़ा' मस्जिद बनवाई। इसी अढ़ाई/दिन के झोंपड़े में पंजाब शाह का उर्स भरता है।

☛ असत्य कथन पहचानिए–

युद्ध	समय
(1) बाडी	1518 ई.
(2) खातोली	1517 ई.
(3) बयाना	1523 ई.
(4) खानवा	17 मार्च, 1527 ई. (3)

व्याख्या–

- **खातोली का युद्ध**–खातौली का युद्ध 1517 ई. मे राणा सांगा व दिल्ली के सुल्तान इब्राहिम लोदी के मध्य हुआ। इस युद्ध में सांगा ने इब्राहिम लोदी को हराया/खातोली राजस्थान के वर्तमान में कोटा जिले में है।
- **बाड़ी का युद्ध**–बाड़ी का युद्ध 1518 ई. मे राणा सांगा व इब्राहिम लोदी के मध्य हुआ, इस युद्ध में राणा सांगा की विजय।
  → बाड़ी राजस्थान के धौलपुर जिले में है।
- **बयाना का युद्ध**–बयाना का युद्ध 16 फरवरी 1527 ई. में राणा सांगा व बाबर के मध्य हुआ। इस युद्ध में राणा सांगा की विजय हुई। बयाना राजस्थान के भरतपुर जिले में है।
- **खानवा का युद्ध**–खानवा का युद्ध 17 मार्च 1527 ई. में खानवा के मैदान में राणा सांगा व बाबर के मध्य हुआ। तोपखाने एवं तुलुगमा युद्ध पद्धति के कारण बाबर की विजय हुई।

☛ **राणा सांगा की मृत्यु कहाँ हुई?**
(1) मांडलगढ़ (2) बसवा (दौसा)
(3) कटारगढ़ (4) पीपाड़ (2)

व्याख्या– 30 जनवरी 1528 ई. को बसवा (दौसा) में राणा सांगा की मृत्यु हुई।

- माण्डलगढ़ में सांगा का समाधि स्थल है।
- राणा सांगा की मृत्यु के पश्चात् राणा रतन सिंह (1528-1531 ई.) व उसके पश्चात् विक्रमादित्य मेवाड़ का शासक बना।

☛ **अकबर ने जयमल फत्ता की वीरता से मुग्ध होकर इनकी हाथी पर सवार पत्थर की मूर्तियाँ कहाँ पर लगवाई?**
(1) आगरा में (2) टॉडगढ़ में
(3) सिवाना में (4) उज्जैन में (1)

☛ **किशनगढ़ की राजकुमारी चारूमती का विवाह किसके साथ हुआ?**
(1) राजसिंह (2) राणा लाखा
(3) बालकराव (4) बंजारा (1)

☛ **इतिहास में 'रुठी रानी' के नाम से कौन प्रसिद्ध है?**
(1) चाँद कंवर (2) उमादे
(3) नेतलदे से (4) रंगादे से (2)

व्याख्या–जैसलमेर के राव लूणकरण की पुत्री थी।

- इतिहास में रूठी रानी के क नाम से प्रसिद्ध उमादे जैसलमेर के राव लूणकरण की पुत्री व राव मालदेव की पत्नी थी। उमादे राव माल देव से रूठकर अजमेर के तारागढ़ दुर्ग में रही।

☛ **चाँद बावड़ी (जोधपुर) का निर्माण किसने करवाया था?**
(1) चाँद कंवर ने (2) पेमलदे ने
(3) मेतलदे ने (4) रंगादे ने (1)

☛ **"एक मुट्ठी बाजरे के लिए, मैं, हिन्दुस्तान की बादशाहत खो" देता यह कथन शेरशाह सूरी का कौनसे युद्ध के लिए है–**
(1) पानीपत का युद्ध (2) सामुगढ़ का युद्ध
(3) गिरी सुमेल का युद्ध (4) खजुआ का युद्ध (3)

व्याख्या–**गिरी सुमेल युद्ध**–गिरी सुमेल का युद्ध राव मालदेव व शेरशाह सूरी के मध्य 5 जनवरी 1544 ई. में हुआ। इसमें राव मालदेव की पराजय हुई। राव मालदेव के सेनानायक जेता व कुम्पा इस युद्ध मे वीरगति की प्राप्त हुए।

- जेता व कुंपा की वीरता से प्रभावित होकर शेरशाह सूरी ने कहा। एक मुट्ठी भर बाजरे के लिए मैं हिन्दुस्तान की बादशाहत खो देता।
- वीरम देव व राव कल्याणमल ने मालदेव के विरुद्ध शेरशाह से गठजोड़ किया।

☛ **फ्रांसीसी ग्रंथों में मारवाड़ के किस शासक को 'हशमत वाला शासक' कहा गया ?**
(1) राव मालदेव (2) राव चन्द्रसेन
(3) राव जोधा (4) महाराणा जसवंत सिंह (1)

व्याख्या–राव मालदेव (1531-1562 ई.) को फ्रांसिसी ग्रंथों में 'हशमत वाला शासक' कहा गया।

- राव मालदेव की मारवाड़ का प्रथम पितृहंता कहा जाता है।
- शेरशाह की मृत्यु (1545 ई0) के बाद मालदेव ने जोधपुर पोकरण, फलौदी, बाड़मेर, कोटड़ा, जालौर और मेड़ता पर पुन: अधिकार कर लिया।
- 1562 ई0 में मालदेव की मृत्यु हो गई। राव मालदेव की मृत्यु के बाद राव चन्द्रसेन शासक बना।

☛ **मुगल सम्राट अकबर ने 1564 ई. में किसे मारवाड़ के विरुद्ध राव चन्द्रसेन को अकबर की अधीनता स्वीकार करने के लिए भेजा?**
(1) नासिर हुसैन खाँ (2) हुसैन कुली खाँ
(3) हुसैन कुतुब खाँ (4) हुसैन महत्तर खाँ (2)

व्याख्या–राव मालदेव ने राव चन्द्रसेन को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया है जो कि उनका तीसरा पुत्र था। राव चन्द्रसेन को अपने दो बड़े भाइयों राम और उदयसिंह के विरोध का सामना करना पड़ा। 1564 ई. में राम अकबर की शरण में चला गया। अकबर ने हुसैन कुली खां के नेतृत्व में सेना भेजकर 1564 ई.में जोधपुर पर अधिकार कर लिया।

☛ **नागौर दरबार का आयोजन कब हुआ था?**

(1) 1565 ई. में (2) 1570 ई. में
(3) 1615 ई. में (4) 1580 ई. में (2)

व्याख्या–मुगल सम्राट अकबर ने राजपूत राज्यों को अधीन लाने के लिए नागौर में एक दरबार का आयोजन 1570 ई. में किया। इस दरबार में जैसलमेर के हरराय भाटी, बीकानेर के राव कल्याणमल तथा जोधपुर के मोटा राजा उदय सिंह सम्मिलित हुए। राव चन्द्र सेन भी जोधपुर प्राप्ति की आशा से इस दरबार में उपस्थित हुए लेकिन अधीनता स्वीकार करने की बजाय वे दरबार छोड़कर सिवाणा चले गए।

☛ **मारवाड़ के चन्द्रसेन ने मुगलों से संघर्ष के लिए किस स्थान पर सेना को संगठित किया?**

(1) भाद्राजूण (2) लोहावट
(3) कापूजा (4) खरातल (1)

व्याख्या–1564 ई. में जोधपुर को छोड़ने के बाद चन्द्रसेन ने कुछ समय तो भाद्राजूण में रहकर मुगलों की फौजों का मुकाबला किया, परन्तु जब मुगल सेना ने उसे चारों ओर से घेर लिया तो वहां से हटकर उसे सिवाणा में अपना मोर्चा बनाना पड़ा।

- रावल सुखराज, सूजा तथा देवीदास चन्द्रसेन के साथी थे।
- राव चन्द्रसेन ने सिवाना से निकलकर, पिपलोद और काणूजा के पहाड़ों में चला गया और आस-पास लूट आरंभ कर दी। इस नीति से मारवाड़ के लोग अप्रसन्न हो गए।

☛ **विश्वेश्वरनाथ रेऊ ने चन्द्रसेन की तुलना किससे की?**

(1) राणा सांगा से (2) राणा कुंभा से
(3) राणा प्रताप से (4) उदयसिंह से (3)

व्याख्या–विश्वेश्वरनाथ रेऊ ने चन्द्रसेन की तुलना महाराणा प्रताप से की, जिसे उसी के समान मुगल शक्ति का सामना करना पड़ा और पहाड़ों में भटकने के बाद भी मुगलों की अधीनता स्वीकार नहीं की।

- राव चन्द्रसेन की मारवाड़ का प्रताप/प्रताप का अग्रगामी व 'मारवाड़ का भूला बिसरा नायक' के नाम से जाना जाता है।

☛ **उदयसिंह ने 1587 में अपनी पुत्री जोधाबाई (जगत गुसाई) का विवाह किसके साथ किया?**

(1) बाबर (2) हुमायूँ
(3) अकबर (4) जहाँगीर (4)

व्याख्या–मोटा राजा उदयसिंह–1583 ई. में अकबर ने उदय सिंह को मुगल अधीनता में जोधपुर का शासक नियुक्त किया। उदयसिंह राव चन्द्रसेन का भाई था।

- उदयसिंह ने 1587 ई. में अपनी पुत्री जोधा बाई (जगत गुसाई) का विवाह जहाँगीर के साथ किया। खुर्रम जहांगीर की इसी पत्नी से उत्पन्न पुत्र था। इस विवाह के अवसर पर उदय सिंह को 1000 का मनसबदार बनाया गया।

☛ **मुहणौत नैणसी किसका मंत्री था?**

(1) राव जोधा का (2) राजसिंह का
(3) जसवंत सिंह प्रथम का (4) हनुवंत सिंह का (3)

व्याख्या–मुहणौत नैणसी जसवंतसिंह प्रथम का मंत्री था। नैणसी के 'नैणसी री ख्यांत व मारवाड रा परगना री विगत' नामक ग्रंथों की रचना की थी।

- जसवंत सिंह प्रथम विद्वानों का आश्रय दाता था। उनके समय के विद्वानों में सूरत मिश्र: नरहरिदास, नवीन कवि, बनारसी दास आदि प्रसिद्ध थे।
- मुहणौत नैणसी को मुंशी देवी प्रसाद ने राजस्थान का अबुल फजल कहा।
- जसवंत सिंह प्रथम ने मुहणौत नैणसी को अपने दरबार में दीवान के पद पर सम्मानित किया।

☛ **महाराजा जसवंत सिंह प्रथम के संबंध में कौनसा कथन सत्य है**

(i) जसवंत सिंह का जन्म बुरहानपुर मे हुआ।
(ii) शाहजहां ने जसवंत सिंह को 4000 जात व सवार का मनसब प्रदान किया।
(iii) 1662 ई. में जसवंत सिंह को मराठों के विरुद्ध शाइस्ता खां की सहायता करने के लिए दक्षिण भेजा गया।
(iv) 1673 ई. में जसवंत सिंह को काबूल भेजा गया।

कूट: (1) i, ii व iii (2) केवल i व ii
(3) ii व iv (4) i, ii, iii व iv (4)

व्याख्या–जसवंत सिंह का जन्म 1626 ई. में बुरहानपुर में हुआ था।

- गजसिंह की मृत्यु का समाचार प्राप्त होते ही बादशाह शाहजहां के द्वारा उसे आगरा पहुंचने का निमंत्रण भी मिला। वहां पहुंचने पर शाही तौर पर उसे टीका दिया गया और खिलअत, जड़ाऊं जमधर आदि वस्तुओं से सम्मानित किया गया।
- 1645 ई. में जसवंत सिंह को आगरा का प्रबंध सौंपा।
- 1648. ई. में कंधार अभियान पर भेजा गया।

☛ **राजा जसवंत सिंह प्रथम की मृत्यु 1678 ई. में कहाँ हुई थी?**

(1) लाहौर (2) जमरूद
(3) पंजाब (4) आगरा (2)

व्याख्या–28 नवम्बर 1678 ई. को जसवंत सिंह प्रथम की मृत्यु जमरूद (अफगानिस्तान) में हुई।

- जसवंत सिंह की मृत्यु पर मुगल सम्राट औरंगजेब ने कहा कि 'आज कुफ्र का दरवाजा टूट गया।'
- 5 जनवरी 1659 ई. में खजुवा के मैदान में औरंगजेब और जसवंत सिंह के आपसी अविश्वास के कारण वह शाही डेरे की लूटकर जोधपुर रवाना हो गया। बाद में जयसिंह की मध्यस्थता से जसवंत सिंह और मुगल सम्राट, औरंगजेब के बीच मनमुटाव कम हुआ।

☛ देशनोक में करणी माता का मूल मंदिर किसने बनवाया?
(1) राव बीका ने (2) राव लूणकरण ने
(3) राव जैतसी ने (4) राव कल्याणमल ने (1)

व्याख्या–राव, बीका–बीका मारवाड़ के शासक राव जोधा का पुत्र था। 1488 ई. में उसने बीकानेर की स्थापना कर उसे राठौड़ सत्ता का दूसरा केन्द्र बनाया। इन्होंने देशनोक में करणी माता के मूल मंदिर का निर्माण करवाया।

☛ राव लूणकर्ण को "कलयुग का कर्ण" किसने कहा?
(1) श्यामल दास ने (2) कर्नल जेम्स टॉड
(3) बिठू सूजा ने (4) मुहणौत नैणसी ने (3)

व्याख्या–राव लूणकर्ण– राव लूणकर्ण राव बीका का छोटा पुत्र था। इसने नागौर के शासक मुहम्मद खां को हराया। राव लूणकर्ण 1526 ई. में ठोसी के युद्ध में नारनौल के नवाब अबीमीरा से लड़ता हुआ मारा गया।

- बीठू सूजा ने अपने ग्रंथ राव जैतसी रो छंद में इसे 'कलियुग का कर्ण' कहा है।
- कर्मचंद्रवंशोत्कीर्तन काव्यम नामक ग्रंथ में इसकी दानशीलता की तुलना कर्ण से की गई है।

रांव लूणकरण को लूणकर्ण सर झील का निर्माता माना जाता है।

☛ साहेबा/पाहेबा का युद्ध कब हुआ?
(1) 1541 ई. (2) 1545 ई.
(3) 1555 ई. (4) 1540 ई. (1)

व्याख्या–राव जैतसी मालदेव की सेना से लड़ते हुए वीरगति प्राप्त हुए।

- **राव जैतसी**–जैतसी ने 1534 ई. में काबुल के मुगल शासक कामरान (हुमायूँ का भाई) की पराजित किया।
- इस युद्ध का वर्णन बीठू सूजा ने अपने ग्रंथ 'राव जैतसी रो छंद' में किया।
- राव जैतसी ने बीकानेर पर मालदेव के आक्रमण दौरान अपने मंत्री नागराज को शेरशाह से सहायता प्राप्त करने भेजा। मगर सहायता आने से पूर्व ही 1541 ई. मे साहेबा/पाहेबा (जोधपुर) के युद्ध में राव जैतसी मालदेव की सेना से लड़ता हुआ मारा गया।

☛ 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' नामक ग्रंथ की रचना किसने की?
(1) मुंशी देवी प्रसाद (2) गुहणौत नैणसी
(3) पृथ्वीराज राठौड़ (4) बीठू सूजा (3)

व्याख्या–'वेलि क्रिसन रुकमनी री' नामक ग्रंथ की रचना पृथ्वीराज राठौड़ ने की। पृथ्वीराज राठौड़ अकबर का दरबारी कवि व राव कल्याणमल का पुत्र था।

☛ 1572 ई. में अकबर ने जोधपुर का प्रशासक किले नियुक्त किया था?
(1) राव कल्याण मल (2) राव कर्ण सिंह
(3) राव रायसिंह (4) राव जैतसी (3)

व्याख्या–राव रायसिंह–1572 ई. में अकबर ने जोधपुर का प्रशासक राव रायसिंह को नियुक्त किया था।

- 1570 ई. ऐ अकबर के नागौर दरबार में सम्मिलित हुआ।
- अकबर ने रायसिंह की गुजरात व कंधार अभियान पर भेजा।
- 1574 ई. में रायसिंह 'महाराजाधिराज' की उपाधि के साथ बीकानेर का शासक बना।

☛ बीकानेर में स्थित जूनागढ़ दुर्ग का निर्माण किसने करवाया?
(1) राव बीका (2) राव रायसिंह
(3) राव कल्याणमल (4) राव कर्णसिंह (2)

व्याख्या–रायसिंह ने बीकानेर के जूनागढ़ दुर्ग में का निर्माण करवाया तथा किले के दरवाजे पर जयमल-फत्ता की पाषाण मूर्तियां लगवाई।

- जूनागढ़ दुर्ग के भीतर राजसिंह प्रशस्ति लिखवाई।
- मुंशी देवी प्रसाद ने रायसिंह को 'राजपूताने का कर्ण' की संज्ञा दी।

☛ मतीरे की राड़ का युद्ध किन किन के मध्य हुआ?
(1) अमरसिंह व कर्ण सिंह (2) जयमल-फत्ता
(3) कुम्भा-जोधा (4) मालदेव-जैतसी (1)

व्याख्या–नागौर और बीकानेर के मध्य हुआ।

- **मतीरे की राड़ का युद्ध**–बीकानेर के राव कर्णसिंह व नागौर के शासक अमर सिंह के मध्य जाखनियां गांव की सीमा विवाह को लेकर 1642-1644 ई. के मध्य युद्ध हुआ जो इतिहास में 'मतीरे की राड़' के नाम से जाना जाता है।

☛ चिंतामणी भट्ट के कौनसे ग्रंथ में कर्णसिंह को जांगलधर बादशाह कहा?
(1) कल्पमुद्रम (2) शुक्र सप्तति
(3) अणुभाष्य (4) कर्णभूषण (2)

व्याख्या–चिंतामणी भट्ट के ग्रंथ शुक्र सप्तति में कर्णसिंह को 'जांगल धर बादशाह' कहा गया।

- कर्ण सिंह ने साहित्य कल्पद्रुम और उसके दरबारी विद्वान गंगानन्द मैथिली ने कर्ण भूषण और काव्य डाकिनी नामक ग्रंथ लिखे ।

☛ निम्न में से किस इतिहासकार के अनुसार चौहानों की उत्पत्ति ब्राह्मण वंश से हुई?
(1) डॉ. गौरीशंकर हीराचंद ओझा
(2) डॉ. दशरथ शर्मा
(3) कर्नल टॉड
(4) फरिश्ता (2)

व्याख्या–डॉ. गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने चौहानों को सूर्यवंशी क्षेत्रीय क्षत्रिय माना।

- अचलेश्वर मन्दिर लेख में इन्हें चौहानों को चन्द्रवंशीय माना।
- डॉ. दशरथ शर्मा ने चौहानों की उत्पत्ति ब्राह्मण वंश से मानी।

☛ **किस शिलालेख में सांभर झील के प्रवर्तक वासुदेव को चौहानों का आदिपुरुष माना?**

(1) अचलेश्वर मंदिर लेख (2) घटियाला शिलालेख
(3) बिजौलिया शिलालेख (4) रणकपुर शिलालेख (3)

व्याख्या–बिजौलिया शिलालेख के अनुसार सांभर झील का प्रवर्तक वासुदेव, चौहानों आदि पुरुष था, जिसका समय 551 ई. के लगभग माना जाता है।

- प्रारम्भ में चौहान गुर्जर प्रतिहारों के सामंत थे परन्तु गुवक-प्रथम ने गुर्जर प्रतिहारों की अधीनता से चौहानों को मुक्त करवाया।

☛ **किस लेख में विग्रहराज द्वितीय की विजयों का उल्लेख मिलता है?**

(1) बिजौलिया लेख (2) बसंतगढ़ लेखे
(3) हर्षनाथ लेख (4) कुम्भलगढ़ लेख (3)

व्याख्या–973 ई. के हर्षनाथ लेख में विग्रहराज द्वितीय की विजयों का उल्लेख मिलता है। विग्रहराज ने गुजरात के चालुक्य शासक मूलराज को परास्त किया था। विग्रहराज द्वितीय के बाद दुर्लभराज और गोविन्द तृतीय शासक बने।

☛ **गोविन्द तृतीय की उपाधि 'वैरीघट्ट' निम्न में से किस ग्रंथ में मिलती है?**

(1) पृथ्वीराज विजय (2) पृथ्वीराज रासो
(3) शुक्र सप्तति (4) कल्पमुद्रम (1)

व्याख्या–जयानक के पृथ्वीराज विजय नामक ग्रंथ में गोविन्द तृतीय की उपाधि 'वैरीघट्ट' (शत्रुसंहारक) मिलती है।

- फरिश्ता के अनुसार गोविन्द तृतीय ने गजनी के शासक को मारवाड़ में आगे बढ़ाकर बढ़ने से रोका था।

☛ **अजमेर नगर किसने बसाया–**

(1) अर्णोराज (2) अजयराज
(3) विग्रहराज (4) पृथ्वीराज (2)

व्याख्या–अजयराज ने 1113 ई. में रखने 'अजयमेरू' (अजमेर) नगर बसाया तथा चांदी एवं तांबे के सिक्के चलाये जो 'अजयप्रिय द्रम्म' कहलाये।

- अजयराज 1105 ई. में शासक बना।
- अजयराज की रानी का नाम सोमलवती था जिनका नाम वहां की कुछ मुद्राओं पर अंकित मिलता है।

☛ **निम्न में से किस शासक ने जैन धर्मावलम्बियों को मंदिर बनाने की अनुमति दी व पार्श्वनाथ के मंदिर के लिए स्वर्ण कलश प्रदान किया ?**

(1) अजयराज (2) अंगराज
(3) विग्रहराज चतुर्थ (4) पृथ्वीराज चौहान (1)

व्याख्या–अजयराज शैव मतावलम्बी था।

☛ **महोबा के युद्ध में परमार्दिदेव के सेनापति कौन थे?**

(1) रणमल-रतिपाल (2) आल्हा-ऊदल
(3) गौरा-बादल (4) जैता-कूंपा (2)

व्याख्या–महोबा का युद्ध पृथ्वीराज चौहान व महोबा के चंदेल शासक परमर्दी देव के मध्य 1182 ई. को हुआ। इस युद्ध मे परमर्दी देव पराजित हुआ तथा उनके दो वीर सेनानायक आल्हा व ऊदल लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

☛ **आनासागर झील व पुष्कर में वराह मंदिर का निर्माण किसने करवाया–**

(1) अर्णोराज (2) अजयराज
(3) विग्रहराज (4) पृथ्वीराज (1)

व्याख्या–अर्णोराज ने अजमेर में आनासागर झील व पुष्कर में वराह मंदिर का निर्माण करवाया था।

- अर्णोराज शैव मतावलम्बी था ।
- अर्णोराज ने तुर्कों एवं मालवा के शासकों का परास्त किया था, मगर गुजरात के शासक कुमारपाल चालुक्य से परास्त हुआ।

☛ **देवबोध व धर्मघोष नामक विद्वान किसके दरबार में थे?**

(1) अजयराज (2) अर्णोराज
(3) विग्रहराज चतुर्थ (4) पृथ्वीराज तृतीय (2)

☛ **ललित विग्रहराज नामक ग्रंथ की रचना सोमदेव ने की। यह किसके शासक का दरबारी विद्वान था?**

(1) अजयराज (2) अर्णोराज
(3) विग्रहराज चतुर्थ (4) पृथ्वीराज चौहान (3)

व्याख्या–ललित विग्रहराज नामक नाटक की रचना सोमदेव ने की। इस नाटक में इन्द्रपुर की राजकुमारी देसल देवी व बीसलदेव से का प्रेम प्रसंग है।

- बीसलदेव के नाम से विग्रहराज चतुर्थ जाना जाता था।
- विग्रहराज चतुर्थ ने बीसलपुर बसाकर वहां बीसलपुर झील बनवाई।
- विग्रहराज चतुर्थ से का समय सपादलक्ष का स्वर्णकाल माना जाता है।
- विग्रहराज चतुर्थ के दरबारी विद्वान नरपति नाल्ह ने 'बीसलदेव रासो' नामक ग्रंथ की रचना की।

☛ अजमेर के किस शासक ने अजमेर के खतरगच्छ के अनुयायियों के लिए भूमीदान दिया?
(1) अजयराज (2) अर्णोराज
(3) विग्रहराज द्वितीय (4) पृथ्वीराज (2)

☛ 'जब विग्रहराज चतुर्थ की मृत्यु हो गई तो 'कवि बांधव' की उपाधि निरर्थक हो गई, क्योंकि इस उपाधि को धारण करने की किसी में क्षमता नहीं रही थी। उक्त कथन किसका है?
(1) कोलहोर्न (2) जयानक
(3) सोमदेव (4) नरपति नाल्ह (2)

नोट–*किलहोर्न ने विग्रह राज चतुर्थ के तुलना कालीदास व भवभूति से की।*

☛ पृथ्वीराज तृतीय ने संयोगिता से विवाह किया था। संयोगिता किसकी पुत्री थी?
(1) गहडवाल शासक जयचंद की
(2) चंदेल शासक परमार्दिदेव की
(3) दिल्ली की शासक इब्राहिम लोदी की
(4) तोमर शासक जयचंद की (1)

☛ सुमेलित नहीं है–

लेखक	पुस्तक का नाम
(1) पृथ्वीराज तृतीय	हरिकेली नाटक
(2) सोमदेव	ललित विग्रहराज
(3) चन्दरबरदायी	पृथ्वीराज रासौ
(4) जयानक	पृथ्वीराज विजय (1)

व्याख्या–हरि केली नाटक की रचना विग्रहराज चतुर्थ ने की।

☛ तराईन का प्रथम युद्ध मोहम्मद गौरी और पृथ्वीराज तृतीय के मध्य कब हुआ?
(1) 1192 ई. (2) 1191 ई.
(3) 1527 ई. (4) 1529 ई. (2)

व्याख्या–तराइन का प्रथम युद्ध 1191 ई. में पृथ्वीराज चौहान व मुहम्मद गौरी के मध्य हुआ। इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान की विजय हुई।
- तराइन का द्वितीय युद्ध 1192 ई. में पृथ्वीराज चौहान व मुहम्मद गौरी के बीच हुआ। इस युद्ध में पृथ्वीराज की हार हुई।

☛ रणथम्भौर के चौहान वंश का संस्थापक कौन था?
(1) पृथ्वीराज तृतीय (2) अजयराज
(3) गोविन्दराज (4) सोमदेव (3)

व्याख्या–रणथम्भौर के चौहान वंश का संस्थापक गोविन्द राज (1194 ई.) पृथ्वीराज तृतीय का पुत्र था। गोविन्द राज के उत्तराधिकारी क्रमशः वल्हण, प्रल्हादन और वीर नारायण थे।

☛ हमीर द्वारा अलाउद्दीन के कौनसे विद्रोही को शरण दी गई थी?
(1) हकीम खाँ (2) केहब्रू
(3) मोहम्मद शाह (4) 2 व 3 दोनों (4)

व्याख्या–हम्मीर द्वारा मंगोल विद्रोही मुहम्मदशाह व केहब्रु को शरण देने से दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी हम्मीर से नाराज हो गए थे। हम्मीर ने जब विद्रोहियों को लौटाने से इंकार कर दिया, तब 1299 ई. में उसे खिलजी के आक्रमण का सामना करना पड़ा। इसमें हम्मीर ने तुर्क सेना की पराजित कर दिया।
- 1291 ई. मे जलालुद्दीन खिलजी ने रणथम्भौर पर आक्रमण किया परन्तु उन्हें सफलता नही मिली।

☛ निम्न में से कौनसा कथन सत्य है?
(1) 1301 ई. अलाउद्दीन ने रणथम्भौर पर आक्रमण किया।
(2) हमीर के सेनानायक रणमल और रतिपाल ने विश्वासघात किया।
(3) हमीर की पत्नी रंगदेवी के नेतृत्व में महिलाओं ने जौहर किया।
(4) उपर्युक्त सभी। (4)

व्याख्या–1301 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने रणथम्भौर पर आक्रमण किया, मगर युद्ध मे जब उसे सफलता नहीं मिली तो उसने छल-कपट का सहारा लिया। अलाउद्दीन खिलजी ने हम्मीर के सेनानायक रणमल व रतिपाल की किला देने का लालच देकर अपनी ओर मिला लिया। इन दोनों के विश्वास घात के कारण किले पर तुर्कों का अधिकार हो गया। हम्मीर लड़ता हुआ मारा गया व किले में हम्मीर की रानी रंग देवी के नेतृत्व में महिलाओं ने जौहर किया।

☛ सुमेलित नहीं है–

लेखक	पुस्तक
(1) नयनचन्द्र सूरी	हम्मीर महाकाव्य
(2) चन्द्रशेखर	हमीर मठ
(3) जोधराज	हम्मीर रासो
(4) जयानक	पृथ्वीराज रासौ (4)

व्याख्या–पृथ्वीराज रासो के लेखक चन्दरबरदाई था।
- जयानक ने पृथ्वीराज विजय की रचना की।

☛ जालोर के चौहान वंश के संस्थापक कौन थे?
(1) कीर्तिपाल (2) अजयराज
(3) विग्रहराज (4) कान्हड़देव (1)

व्याख्या–जालोर के चौहान वंश के संस्थापक कीर्तिपाल था, जिसने 1181 ई. में जालौर के चौहान राजवंश की नींव डाली थी।

☛ सुमेलित नहीं है–

(1) जालोर — जलालाबाद
(2) सिवाना — खैराबाद
(3) आमेर — खैराबाद
(4) चित्तौड़ — खिजराबाद (3)

व्याख्या–जालोर दुर्ग का नाम जलालाबाद अलाउद्दीन खिलजी ने रखा था।

- चितौड़ का नाम खिज्राबाद अलाउद्दीन खिलजी ने रखा था।
- सिवाणा दुर्ग का नाम खैराबाद अलाउद्दीन खिलजी ने रखा था।

☛ अलाउद्दीन खिलजी के बारे में कौनसा कथन सत्य है–

(1) अलाउद्दीन खिलजी की पुत्री फिरोजा वीरमदेव से विवाह करना चाहती थी।
(2) 1308 इसमें अलाउद्दीन ने सिवाना विजय अपराह्न वहाँ का प्रतिनिधि कमालुद्दीन को नियुक्त किया।
(3) 1 व 2 दोनों
(4) इनमें से कोई नहीं (3)

व्याख्या–1308 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने जालोर के शक्तिशाली दुर्ग सिवांना पर अधिकार कर लिया और उसका नाम खैराबाद रखा तथा कमालुद्दीन गुर्ग को वहां का प्रतिनिधि नियुक्त किया।

- अलाउद्दीन खिलजी की पुत्री फिरोजा कान्हड़दे के पुत्र वीरमदेव से विवाह करना चाहती थी परन्तु वीरमदेव ने विवाह करने से इंकार कर दिया। मुहणौत नैणसी ने इसी कारण को अलाउद्दीन खिलजी व कान्हड़दे के मध्य संघर्ष का कारण माना है।

☛ दहिया सरदार बीका द्वारा कौनसे युद्ध में विश्वासघात किया गया?

(1) 1311 जालोर युद्ध में (2) 1308 सिवाना युद्ध में
(3) 1301 रणथम्भौर युद्ध में (4) 1303 चित्तौड़ युद्ध में (1)

व्याख्या–1311 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने जालोर पर घेरा डाला था लेकिन सुल्तान को सफलता नहीं मिली। अंत में कान्हड़दे के एक दहिया सरदार बीका के विश्वासघात के कारण दुर्ग पर अलाउद्दीन का अधिकार हो गया। कान्हड़दे लड़ता हुआ मारा गया और किले की महिलाओं ने रानी जैतलदे के नेतृत्व में जौहर किया।

- अलाउद्दीन ने जालौर जीतकर उसका नाम जलालाबाद रख दिया।

☛ अलाउद्दीन खिलजी के जालोर आक्रमण के समय अलाउद्दीन का सेनापति कौन था?

(1) कमालुद्दीन गुर्ग (2) एन-उल-मुल्क-मुल्तानी
(3) मलिक मुहम्मद चप (4) नुसरत खां (2)

व्याख्या–1305 ई. में सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी ने सेनानायक एन-उल-मुल्क-मुल्तानी को सेना सहित जालोर भेजा।

- मलिक मुहम्मद चप जलालुद्दीन खिलजी का सेनापति था जिन्होंने जलालुद्दीन को रणथम्भौर से घेरा नहीं उठाने की सलाह दी।
- नुसरत खां अलाउद्दीन खिलजी के राणथम्भौर आक्रमण के समय सेनापति था जो इस अभियान के दौरान मारा गया।

☛ आमेर के कच्छवाह प्रारंभ में किसके सामंत थे?

(1) राठौड़ों के (2) चौहानों के
(3) सिसोदिया वंश के (4) भाटियों के (2)

☛ दूल्हेराय नामक व्यक्ति ने 1137 ई. में किन्हें हराकर ढूंढाड़ राज्य में कच्छवाह वंश की स्थापना की?

(1) मेवों को (2) परमारों को
(3) गुर्जर प्रतिहारों को (4) बड़गुजरों को (4)

व्याख्या–1137 ई. में दूल्हेराय ने बड़गूजरों को परास्त कर ढूंढाड़ में नवीन राज्य स्थापित किया।

- दूल्हेराय ने ही जमवारामगढ़ में मीणाओं को परास्त कर उसे अपनी राजधानी बनाया।
- 1207 ई. में कोकिल देव ने आमेर के मीणाओं को परास्त कर आमेर को अपनी राजधानी बनाया।
- आमेर के कच्छवाहों की प्रथम राजधानी दौसा थी।
- ढूंढ़ाड़ के कच्छवाह वंश की राजधानियाँ– दौसा – जमवारामगढ़ – आमेर – जयपुर

☛ भारमल ने 1562 ई. में अपनी पुत्री हरकाबाई (मरियम-उज-जमानी) का विवाह अकबर के साथ कहाँ पर किया?

(1) साँभर में (2) आमेर में
(3) रामगढ़ में (4) तारागढ़ में (1)

व्याख्या –अकबर जनवरी 1562 ई. में अजमेर की यात्रा पर आया था, अजमेर से लौटते समय सांभर में भारमल ने 1562 ई. मे अपनी पुत्री हरखाबाई (जिसे कालांतर में मरियम उज्जमानी नाम से जाना गया) का विवाह अकबर के साथ किया। जहांगीर इसी हरखाबाई का पुत्र था।

- 1562 ई. मे सांभर में ही भारमल ने अपने पुत्र भगवान दास और पौत्र मानसिंह सहित अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली।
- भारमल मुगल अधीनता स्वीकार करने वाला पहला राजपूत था।

☛ 1585 ई. में अपनी पुत्री मानबाई का विवाह भगवान दास ने किसके साथ किया?

(1) बाबर (2) हुमायूँ
(3) अकबर (4) जहाँगीर (4)

व्याख्या–भगवान दास ने 1585 ई. में आमेर पुत्री मान बाई का विवाह जहांगीर के साथ किया। खुसरो मानबाई व जहांगीर का पुत्र था।

- भगवान दास 1573 ई. में आमेर की गद्दी पर बैठा।
- भगवान दास सात वर्ष तक पंजाब का सूबेदार रहा।
- 1589 ई. में लाहौर मे भगवान दास की मृत्यु हो गई।

☛ **अकबर ने फर्जंद (बेटा) की उपाधि किसे प्रदान की?**

(1) भगवंतदास को (2) मानसिंह को
(3) भारमल को (4) कल्याणमल को (2)

व्याख्या–अकबर ने मानसिंह की फर्जंद की उपाधि व 7000 का का मनसब दिया।

- मानसिंह ने अकबर व जहाँगीर दो मुगल सम्राटों की सेवा की।
- 1576 ई. में हल्दीघाटी युद्ध में अकबर की सेना का नेतृत्व किया।
- मानसिंह अकबर के नवरत्नों में शामिल था।
- मानसिंह की मृत्यु 1614 ई. में इलिचपुर में हुई।

☛ **अपने पुत्र जगत सिंह की स्मृति में जगत शिरोमणी मंदिर का निर्माण किसने करवाया?**

(1) मानबाई ने (2) हरखाबाई ने
(3) कंकावती ने (4) रंगादेवी ने (3)

व्याख्या– मानसिंह के समय रानी कंकावती ने अपने पुत्र जगतसिंह की स्मृति में जगत शिरोमणी मंदिर का निर्माण करवाया था।

☛ **मानसिंह के संबंध में कौनसा कथन सत्य है?**

(1) 1576 ई. में हल्दीघाटी के युद्ध में अकबर की सेना का नेतृत्व किया।
(2) 1589 ई. में जब यह बिहार का सूबेदार था जो इसके पिता भगवानदास की मृत्यु हो गई इसे आमेर का शासक बनाया।
(3) अकबर के नवरत्नों में सम्मिलित था।
(4) उपर्युक्त सभी (4)

व्याख्या–मानसिंह 1589 ई. में आमेर का शासक बना।

- मानसिंह ने 1592 ई. में उड़ीसा को जीतकर पहली बार उसे मुगल साम्राज्य का अंग बनाया।
- मान सिंह के समय मुरारीदान ने मान-प्रकाश व जगन्नाथ ने मान सिंह कीर्ति मुक्तावली की रचना की।
- अकबर के 1569 ई. के रणथम्भौर अभियान में सुर्जन हाड़ा को मुगल अधीनता स्वीकार कराने में मान सिंह ने भूमिका निभाई।

☛ **तीन मुगल सम्राटों की सेवा करने वाला शासक कौन था?**

(1) मिर्जा राजा जयसिंह (2) भगवंत दास
(3) मानसिंह (4) भारमल (1)

व्याख्या–पुरूंदर की संधि 1665 ई. शिवाजी व मिर्जा राजा जयसिंह के मध्य हुई।

- सात मुगल शासकों का शासनकाल सवाई जयसिंह ने देखा।
- मिर्जा राजा जयसिंह को तीन मुगल सम्राटों जहांगीर शाहजहां और औरंगजेब की सेवा में रहने का अवसर प्राप्त हुआ।
- मिर्जा राजा जयसिंह 1621 ई. में जयपुर बने।
- 1637 ई. में शाहजहां ने जयसिंह को मिर्जा राजा की पदवी देकर शूजा के साथ कंधार भेजा।
- उत्तराधिकारी युद्ध में मिर्जा राजा जयसिंह को शूजा के विरुद्ध भेजा जहाँ बहादूरपुर के युद्ध (1658 ई.) में शूजा को पराजित किया।

☛ **मिर्जा राजा जयसिंह व शिवाजी के मध्य किस वर्ष ऐतिहासिक पुरन्दर की संधि हुई?**

(1) 1665 ई. (2) 1662 ई.
(3) 1667 ई. (4) 1668 ई. (1)

व्याख्या–11 जून 1665 ई. में मिर्जा राजा जयसिंह व शिवाजी के मध्य पुरन्दर की संधि हुई, जिसमें शिवाजी ने मुगलों की अधीनता को स्वीकार कर लिया था।

☛ **कवि बिहारी किसके दरबार की शोभा बढ़ाता था?**

(1) राजा मान सिंह प्रथम
(2) सवाई जय सिंह
(3) मिर्जा राजा जयसिंह
(4) सवाई प्रतापसिंह (3)

व्याख्या–मिर्जा राजा जयसिंह के दरबारी कवियों में बिहारी को संरक्षण प्राप्त था, जिसने बिहारी सतसई नामक ग्रंथ की रचना की थी।

☛ **मिर्जा राजा जयसिंह के संबंध में निम्न कथनों पर विचार कीजिए व नीचे दिए गये कूट में से सही कूट का चयन करे-**

(i) मिर्जा राजा जयसिंह को 1623 ई. में मलिक अम्बर के विरुद्ध दक्षिण में भेजा गया।
(ii) 1629 ई. में इन्होंने उत्तर-पश्चिमी सीमांत में उजवेगों ने के विद्रोह को दबाया।
(iii) 1630 ई. में जयसिंह ने खान-ए-जहां लोदी के विद्रोह की को दबाया।
(iv) 1636 ई. में शाहजहां के साथ बीजापुर व गोलकुण्डा अभियान पर दक्षिण भारत गया।

(1) केवल 1 व 2 (2) केवल 1 व 3
(3) केवल 1, 2 व 3 (4) 1, 2, 3 व 4 (4)

☛ **सवाई जयसिंह को 'सवाई' की उपाधि किसने प्रदान की?**

(1) बाबर ने (2) हुमायूँ ने
(3) औरंगजेब ने (4) शाहजहाँ ने (3)

व्याख्या–सवाई जयसिंह को सवाई की उपाधि औरंगजेब ने दी थी। सवाई जयसिंह का जन्म 3 दिसम्बर 1688 ई. में हुआ।

- 1700 ई. में सवाई जयसिंह ने आमेर का राज्य भार संभाला।
- सवाई जयसिंह ने सात मुगल शासकों का शासन काल देखा।

☛ **जयबाण तोप का निर्माण किसने करवाया?**

(1) मिर्जा राजा जयसिंह (2) सवाई जय सिंह
(3) मानसिंह (4) भगवान दास (2)

व्याख्या–जयसिंह ने जयगढ़ में जयबाण निर्माण करवाया था। 1734 ई. में जयसिंह ने जयपुर में नाहरगढ़ किले का निर्माण करवाया था।

- सवाई जयसिंह ने चन्द्रमहल, सिसोदिया रानी का महल व जलमहल का निर्माण करवाया।

☛ **आमेर का नाम 'मोमिनाबाद' किसने रखा?**

(1) बाबर ने (2) हुमायूँ ने
(3) बहादुरशाह ने (4) शेरशाह ने (3)

व्याख्या–आमेर का नाम मोमिनाबाद बहादूर शाह ने रखा था।

- 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के बाद उत्तराधिकारी युद्ध में सवाई जयसिंह ने आजम का पक्ष लिया था, मगर जाजऊ के युद्ध में मुअज्जम विजयी रहा। अत: मुअज्जम (जो बहादूर शाह के नाम से शासक बना था), ने आमेर पहुंचकर विजयसिंह को शासक घोषित कर दिया तथा आमेर का नाम मोमिनाबाद रख दिया।

☛ **जीज मोहम्मद शाही और जयसिंह कारिका ज्योतिष ग्रंथ की रचना किसने की?**

(1) मिर्जा राजा जयसिंह ने (2) सवाई जयसिंह ने
(3) मानसिंह ने (4) भगवंतदास ने (2)

व्याख्या–सवाई जयसिंह ने जयपुर, दिल्ली, मथुरा, उज्जैन, बनारस, में वैधशालाएँ बनवाई।

- जयगढ़ एवं जयबाग तोप का निर्माण करवाया।
- जलमहल का निर्माण करवाया।
- 1725 ई. में सवाई जयसिंह ने नक्षत्रों की शुद्ध सारणी बनवाई और उसका नाम जीज मोहम्मद शाही रखा। जयसिंह ने जयसिंह कारिका नामक ज्योतिष ग्रंथ की रचना की।
- सवाई जयसिंह ने जयपुर, दिल्ली, मथुरा, उज्जैन, बनारस में वैद्यशालाएं बनवाई।
- जयपुर की वैद्यशाला सबसे बड़ी है जिसे जंतर मंतर कहा जाता है। जुलाई 2010 में इसे यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया।

☛ **वह अंतिम हिन्दू नरेश जिसने जयपुर में अश्वमेध यज्ञ कराया?**

(1) मिर्जा राजा जयसिंह (2) सवाई जयसिंह
(3) सवाई प्रताप सिंह (4) राजा मान सिंह (2)

☛ **जयपुर का वास्तुकार कौन था?**

(1) मंडन (2) उस्ताद
(3) विद्याधर (4) महेश (3)

व्याख्या–जयसिंह ने एक बंगाली वास्तु शास्त्री विद्याधर से एक नगर का नक्शा बनवाकर 1727 ई. में आयताकार खण्डों वाले एक नगर का निर्माण किया जिसे जयपुर कहा गया।

☛ **हुरड़ा सम्मेलन किसके प्रयासों का परिणाम था?**

(1) सवाई जयसिंह (2) महाराजा फतेह सिंह
(3) शत्रुसाल हाड़ा (4) राजा अभयसिंह (1)

व्याख्या–जयसिंह के प्रयासों से 17 जुलाई 1734 ई. को राजपूत राजाओं का हुरड़ा में सम्मेलन बुलाया गया। इस सम्मेलन की अध्यक्षता जगतसिंह ने की।

- सवाई जयसिंह पहला राजपूत हिन्दू शासक था जिसने सती प्रथा की रोकथाम हेतु प्रयास किये तथा विधवा विवाह की मान्यता प्रदान करने हेतु नियम बनाये।

☛ **'ढाई साके' के लिए प्रसिद्ध है?**

(1) जैसलमेर (2) बाड़मेर
(3) बीकानेर (4) पाली (1)

व्याख्या– जैसलमेर दुर्ग ढ़ाई साके के लिए प्रसिद्ध है।

- पहला साका जैसलमेर के मूलराज के समय हुआ जब अलाउद्दीन ने जैसलमेर पर आक्रमण किया था।
- दूसरा साका रावल दूदा के समय हुआ था जब फिरोजशाह तुगलक ने जैसलमेर पर आक्रमण किया था।
- तीसरा आर्द्धसाका 1550 ई. मे जैसलमेर के शासक लूणकरण के समय हुआ। लूणकरण ने कंधार के शासक अमीर अली को शरण दी थी और अमीर अली ने विश्वास घात करते हुए लूणकरण पर आक्रमण कर दिया, लूणकरण अपने साथियों के साथ मारा गया परन्तु अंतिम रूप से भाटी विजयी रहे। अत: जौहर नहीं हुआ।

☛ **भरतपुर में स्वतंत्र जाट राज्य के संस्थापक कौन थे?**

(1) बदन सिंह (2) चुडामन
(3) सूरजमल (4) बहादुर सिंह (2)

व्याख्या–भरतपुर के स्वतंत्र जर राज्य का संस्थापक चूड़ामन था।

- मुगल सम्राट औरंगजेब ने चूड़ामन के दमन हेतु 'कच्छवाह नरेश बिशनसिंह' को भेजा परन्तु उन्हें सफलता नहीं मिली।
- चूडामन ने थून नामक स्थान पर किला बनाकर अपना राज्य स्थापित किया।

राजस्थान की हर प्रतियोगी परीक्षा हेतु उपयोगी

❖ राजस्थान सामान्य ज्ञान के नोट्स डाउनलोड करने के लिए नीचे दिए गए इमेज पर क्लिक करें --

❖ राजस्थान की विभिन्न भर्ती परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण नोट्स Free डाउनलोड :-

❖ राजस्थान कला एवं संस्कृति, भूगोल, इतिहास सभी के नोट्स Free डाउनलोड करने का एकमात्र Google वेबसाइट :- *Rajasthanclasses.in*

Rajasthanclasses.in

हर भर्ती की न्यूज सबसे पहले..

यहां उपलब्ध रहेगी 👇👇

Latest News : Get Link

अन्य किसी भी प्रकार की PDF's के लिए

गूगल सर्च करें या क्लिक करें 👇

Google

rajasthanclasses.in

Telegram चैनल ज्वॉइन करें

YouTube पर ऑनलाइन क्लासेज भी देखें

Click Here : Get More PDF